मधुमती

सम्पादक : डॉ० जयसिंह नीरज

SALTOC Project
Title: Madhumatī
Imprint: Udayapura: Rājasthāna Sāhitya Akādamī
OCLC: 3195624
Volume 18: no 2, February 1979

TOC Supplied By: University of Chicago

फरवरी, 1979

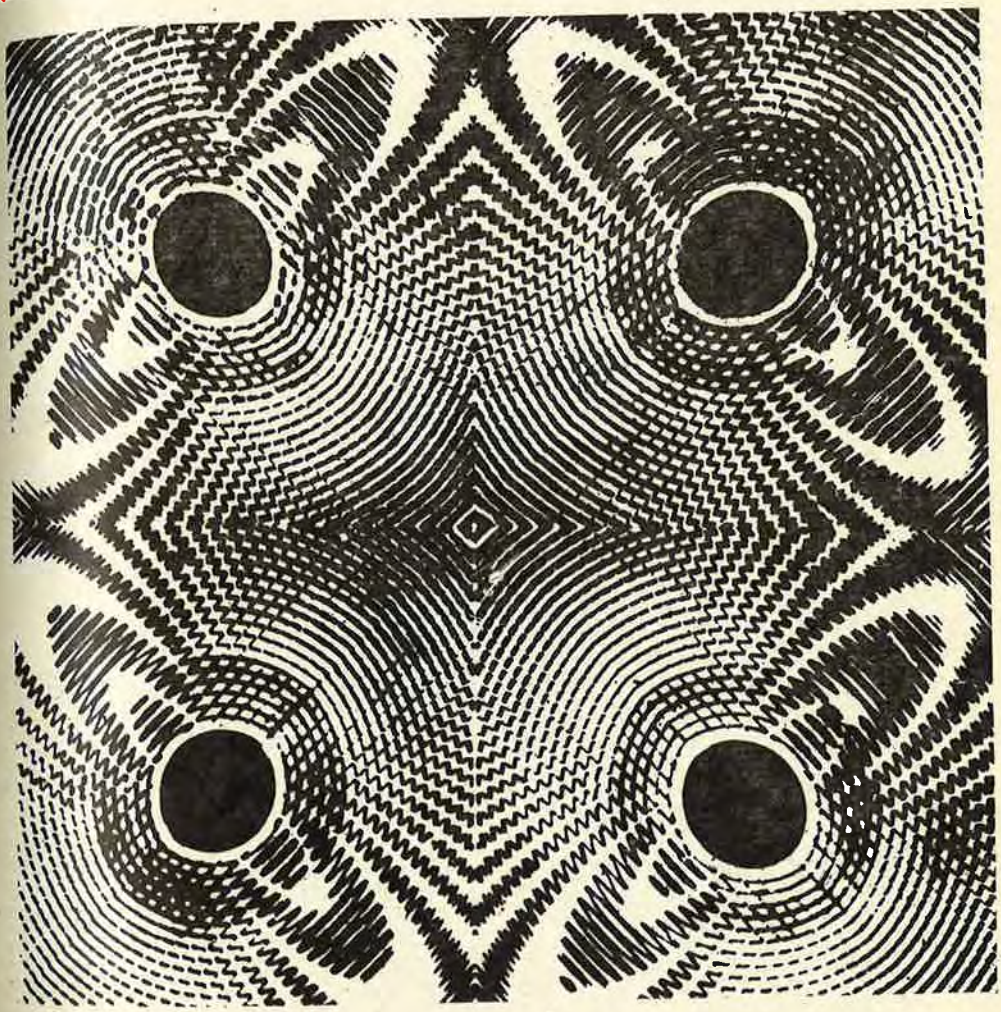

राजस्थान साहित्य अकादमी की साहित्यिक मासिकी : वर्ष 18 अंक 2

सूर-अंक

मधुमती

FEB. 79
Vol. 18, No. 2

वर्ष १८ : अंक २
फरवरी, १९७९ ई०

सम्पादक : डॉ. जयसिंह नीरज
प्रबन्ध सम्पादक : डॉ. राजेन्द्र शर्मा

अनुक्रम

सम्पादकीय :

श्रद्धांजलि :

सूर-सौरभ — गोपालप्रसाद मुदगल — १
सूरदास के प्रति — डॉ. रवीन्द्र भ्रमर — ३
माटी का मसीहा — सवाईसिंह शेखावत — ५

पुनर्मुद्रण :

मध्ययुगीन भक्ति-आंदोलन का एक पहलू — गजाननमाधव मुक्तिबोध (साभार) — ९

आकलन :

सेवक, गुरु और ठाकुर — रामनारायण अग्रवाल — १९
भक्ति आंदोलन और सूरदास — डॉ. अ. द. पाण्डेय — २२
सूर : ब्रज की गोपालक संस्कृति का संदर्भ — डॉ. गोविन्द रजनीश — ३०
ब्रह्म वैवर्त पुराण से सूरसागर में शृंगारी भावों का आदान — डॉ. वैकुण्ठनाथ शास्त्री — ४०
कृष्ण चरित्र के जनधर्मी पक्ष और सूर काव्य — डॉ. राजेन्द्र कुमार — ४५
सूर में जनवादी दृष्टि — डॉ. भैरूंलाल गर्ग — ५१

सूरदास और मुस्लिम संस्कृति	अब्दुल बिस्मिल्लाह	५९
वन्य जीवों के प्रति सूर का दृष्टिकोण	आशा रानी	६५
सोलह शृंगार : सूर प्रसंग	डॉ. हर्षनंदिनी भाटिया	७१
त्रिवेणी : साहित्य, संगीत, कला		
तीन पद	रमेश यादव	८१
त्वरा	गजेन्द्रसिंह सोलंकी	८३
सूरसागर : रस तथा संगीत तत्व का विनियोग	डॉ. श्रीमती आशा प्रसाद	८४
टिप्पणी :		
सूरसागर में चित्रयोजनात्मक तत्व	डा. जयसिंह नीरज	८८
सूर साहित्य : एक परिप्रेक्ष्य	विद्यानिवास मिश्र	९३
आधुनिक संदर्भ और सूर प्रासंगिकता	मधुबाला नरूका	९५
सूर की काव्य भाषा	परमानन्द श्रीवास्तव	९९
सूर काव्य में वर्ग संघर्ष	डॉ. मदन केवलिया	१०४
संस्थानिक गतिविधियाँ :		११०

एक प्रति का मूल्य : 1–50
वार्षिक शुल्क : 15–00

आवरण कथा– पारस भंसाली का यह चित्र ऑप आर्ट का एक सुन्दर उदाहरण है। श्री भंसाली राजस्थान के माने हुए कलाकार हैं, जिनकी कलम में श्रम साध्य गरिमा दर्शनीय है। समय-समय पर वे आवरण चित्र और व्यवसायिक चित्र भी बनाते रहे हैं। रेखाओं की सुघड़ता व रंगों की चटकी उनकी निजी विशेषता है। कलादीर्घाओं में अनेक बार उनकी कृतियाँ प्रदर्शित और पुरस्कृत हो चुकी हैं।